प्रा: तक्लास 13-5-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

प्र ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चे, है तो जिसम के साथ। बाप भी अभी जिस्म के साथ के साथ है। इस घोड़े वा घोड़ी पर सवार है। और बच्चों को क्या सिखलाते हैं, जीते जी मरना कैसे होता है। और कोई सिखला न सके सिवाय बाप के। बाप का परिचय सभी को मिला है। वह ज्ञान सागर पतित पावन है। ज्ञानसे ही तुम पतित से पावन बनते हो। और पावन दुनिया भी बनानी है। इस दुनिया का ड्रामा पलैन अनुसार विनाश होना नूंधा हुआ है। सिर्फ जो बाप को पहचानते हैं और ब्राहमण भी बनते हैं। ब्राहमण भी जरूर बनना ही है। पवित्र बनने लिए। पवित्र अलग हो जाते हैं। इसलिए यह संगम युग है ही अलग। पुरुषोत्तम अर्थात उत्तम ते उत्तम पुरुष बनने का संगम युग। कहेंगे उत्तम तो बहुत साधु सन्त महात्मा, वज़ीर, अमीर, प्रजीडेन्ट आद हैं परन्तु नहीं। यह तो कलियुगी पुरानीदुनिया भ्रष्टाचारी दुनिया है। पतितदुनिया में पावन एक भी नहीं। अभी तुम संगम युगी बने हो। तुम्हारे जो गुरु थे वह भी पावन नहीं थे। क्योंकि वह भी जाते हैं गंगा स्नान करने। वह लोग पतित-पावनी पानी को समझते हैं। सिर्फ गंगा नहीं। जो भी नदियां हैं, जहां भी पानी देखते हैं समझते हैं पानी ही पावन करने वाला है। यह बुधि में बैठा हुआ है। कोई कहां कोई कहा जाते हैं। मतलब पानी में स्नान करने जाते हैं पावन बनने लिए। खुद साधुलोग भी जाते हैं और उन्हों के साथ लाखों आदमी जाते हैं। तुम उन्हों को भी समझा सकते हो। परन्तु इस समय वह नहीं समझेंगे। उन्हों के फालोअर्स बहुत ढेर हैं। जब उन्हों के अच्छे2 फालोअर इस तरफ आ जाये और राईट बात सुने, समझे कि बरोबर हमारी भूल है। पानी से तो कोई पावन हो न सके। अगर पानी में स्नान करने से पावन हो जाते फिर तो इस समय सारी सृष्टि ही पावन होती। इतने सभी पावन दुनिया में होनी चाहिए। यह तो पुरानी रसम चली आती है। सारा में जाकर सारा कचड़ा पड़ता है। फिर वह पावन कैसे बनावेंगे। पावन तो [illegible]ना है आत्मा को। इसके लिए तो परमपिता चाहिए जो आत्माओं को पावन बनावे। [illegible] समझ [illegible]वन होते ही हैं सतयुग में। पतित [illegible] है कलियुग में। अभी तुम संगम युग पर हो। तुम पतित से पावन होने लिए पुरुषार्थ करते हो। तुम जानते हो हम शुद्र वर्ण के थे। अभी ब्राहमण वर्ण के बने हैं। शिव बाबा प्रजापिता ब्रहमा द्वारा बनाते हैं। हम हैं सच्चे2 मुखवंशावली ब्राहमण। वह हैं कुख वंशावली ब्राहमण। प्रजापिता तो प्रजा तो सारी हो गई। प्रजा का पिता है ब्रहमा। वह तो बहुत ग्रेट2 ग्रैन्डफादर है हो गया। जरूर वह था फिर कहां गया। पुनर्जन्म तो लेते हैं ना। विष्णु भी पुनर्जन्म लेते हैं। यह राज़ तो समझाया है ब्रहमा और सरस्वती मां और बाप। वही फिर महाराजा महारानी बनते हैं। जिसको ही विष्णु कहा जाता है। वही फिर 84 जन्मों के बाद आकर मां और बाप बनते हैं। कहते भी हैं जगत-अम्बा। सारी जगत की मां हो गई। लौकिक मां तो हरेक के अपने2 घर बैठी हैं। परन्तु जगदम्बा को कोई भी नहीं जानते। ऐसे ही अन्धश्रधासे कह देते हैं। जानते कोई को नहीं। जिसकी पूजा करते हैं उनके आक्युपेशन को नहीं जानते। जो भी ऋषि-मुनि आद होकर गये हैं उन से पूछा जाता है था तुम रचयिता और रचना के आद [illegible] अन्त को जानते हो। तो नेती2 कह देते थे। अभी तुम बच्चे जानते हो रचयिता है ऊंच ते ऊंच। यह उल्टा झाड़ है। इनका बीज ऊपर में है। बाप को ऊपर से नीचे आना पड़े तुमको पावन बनाने। तुम बच्चे जानते हो बाबा आयाहुआ है। हमको पावन बनाकर, सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देकर फिर उस नई सृष्टि का चक्रवर्तीराजा बनाते हैं। इस चक्र के राज़ को दुनिया में तुम्हारे सिवाय कोई नहीं जानते। कोई भी रचयिता और रचनाके आदि मध्य अन्त को नहीं जानते। रचयिता ही अपना और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाते हैं। कहते हैं फिर 5000वर्ष आकर तुमको यह बनाऊंगा। यह भी है ड्रामा में बना बनाया। ड्रामा के क्रियटर, डायरेक्टर मुख्य एक्टर्स और ड्रामा के आदि मध्य अन्त को एक्टर्स अगर न जाने तो उनको बेअकल मूर्ख कहेंगे ना। बाप कहते हैं 5000वर्ष पहले भी हम ने तुमकोसमझाया था। तुमको अपना परिचय दिया था। जैसे कि अभी दे रहा हूं। तुमको पवित्र भी बनाया था। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। वही सर्वशक्तिवान पतित-पावन है।

गायन भी है अन्ताकल जो फलाना सिमरे · · · वल वल अर्थातघड़ी-घड़ी। अभी इसप्र समय तुम जन्म तो लेते परन्तु शुकर कुकर, कुत्ते-बिल्ले नहीं बनते। वेश्यारं बनते हैं। वेश्याओं के भी बच्चे तो होते हैं ना। ऐसे नहीं कि नहीं होते हैं। यहां एक काम करता था वह वेश्या का बच्चा था। इसकेलिए इनको कहा ही जाता है वेश्यालय। अभी तुम बच्चे चलने वाले हो शिवालय में। शिवालय नई दुनिया को कहा जाता है। वेश्यालय से शिवालय बनने मेंएक सेकण्ड लगता है। फिर शिवालय से वेश्यालय बनने में 84 जन्म लग जाते हैं। मेक्सीमम बहुत ते बहुत जन्म 84 है। फिर कम होते2 एक जन्म तक हो जाते हैं। बच्चे समझते हैं शिवालय में बहुत ही थोड़े होते हैं। वेश्यालयमें तो कितने ढेर मनुष्य हैं। अभी बेहद का बाप आया हुआ है। कहते हैं मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूं। यह सभी काम चिक्षा पर बैठ काले हो गये हैं। उन्हों को फिर ज्ञान-चिक्षा पर चढ़ाना है। तुम अभी ज्ञान चिक्षा पर चढ़े हो। ज्ञान चिक्षा पर चढ़ कर फिर विकार में जा नहीं सकते। प्रतिज्ञा करते हैंहम पवित्र रहेंगे। बाबा कोई वह रखड़ी नहीं बांधते हैं। यह तो भक्ति-मार्ग का रिवाज़ चला आता है। वास्तव में यह है इस समय की बात। तुम समझते हो पवित्र बनने बिगर नई दुनिया के मालिक कैसे बनेंगे। फिर भी पक्का कराने लिए प्रतिज्ञा लिखाई जाती है बच्चों से। कोई बल्ड से लिख कर देते हैं। कोई कैसे लिखते हैं। बाबा आप आये हैंहम आप से वर्सा जरूर लेंगे। निराकार साकार में आये हैं ना। जैसे बाप अवतरते हैं वैसे तुम आत्मारं भी अवतरते हो। ऊपर से नीचे आते हो पार्ट बजाने। यह भी तुम समझते होयहसुख और दुःख का खेल है। तुम्हारे बुधि में है आधा कल्प है सुख आधा कल्प है दुःख। बाप समझाते हैंपौना से भी जास्ती सुख भोगते हो। आधा कल्प के बाद भी तुम बहुत धनवान थे। कितने बड़े2 मंदिर आद बनाते थे। दुःख तो पीछे होता है। जब बिल्कुल तमोप्रधान भक्ति बन जाती है। बाप ने समझाया है तुम पहले2 अव्यभिचारी भक्ति थी। सिर्फ एक की भक्ति करते थे। जो बाप तुमको देवता बनाते हैं, सुखधाम [illegible] जाते हैं तुम उनकी ही पुजा करते थे। फिर बाद में व्यभिचारी भक्ति शुरु होती है। पहले तो एक हीपूजा [illegible] थे। अभी तो 5भूतों के बनाये हुये शरीरों की पूजा करते रहते हैं। चैतन्य [illegible] भी तो जड़ की भी पूजा करते हो। 5तत्व के बनाये हुये शरीर को देवतारं से भी ऊंच समझते×प्र और पूजे हैं। देवताओं को सिर्फ ब्राहमण ही हाथ लगा सकते हैं। तुम्हारे तो ढेर के ढेर गुरु लोग हैं। यह बाप बैठ कर बतलाते हैं। इसने भी गुरु किये हैं। कहते हैंहम ने भी सभी कुछ किया। भिन्न2 हठयोग आद कान नाक मूंदना, घंट बजाना यह सभी कुछ किया। आखिरीन सभी कुछ छोड़ देना पड़ा। [illegible] धंधा करे या यह धंधा बैठ करें। पिनकी आतीरहती थी। तंग हो जाता। पुराना नियम आद सीखने में बड़ी [illegible]कलीफ होती है। आधा कल्प भक्ति मार्ग में थे। अभी मालूम पड़ता है। बाबा बिल्कुल एक्युरेट बताते हैं। [illegible]ह कहते हैं भक्ति परमपरा से चली आती है। अभी सतयुग मे भक्ति कहां से आई। हो नहीं सकता। यहां यह [illegible]तें कहां से आई। मनुष्य कुछ भी समझते नहीं। मूंढ़ मति है ना। मूंढ़ बुधि को बन्दर बुधि जनावरबुधि कहा [illegible]ता है। एक को कहते भी हैं तुम तो भकनी हाथी हो, उल्लु हो। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे। बाप आकर [illegible]यिताऔर रचना का भी परिचय देते हैं। कहते हैं मैं हर 5000वर्ष [illegible] बाद आता हूं। शरीर भीउनका लेता [illegible]हूं जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। यही नम्बरवन में था फिर 84 जन्म ले पतित बना है। नम्बरवन जो [illegible]न्दर था वही फिर काला बन गया है। आत्मारं भिन्न2 शरीर धारण करती हैं। तो बाप कहते हैं मैं जिस में [illegible]ने प्रवेश करता हूं। मैं इन में बैठा हूं। क्या सिखलाने? जीते जी करना। इस दुनिया से तो मरना ही है। अभी तुमको पवित्र होकर मरना है। मेरा पार्ट ही है पावन बनाने का। तुम भारतवासी बुलाते हो होपतित-[illegible]न · · · और कोई ऐसे नहीं कहते है लिबरेटर। दुःख की दुनिया से छूड़ाने लिए आओ। सभी मुक्तिधाम चले [illegible]। जिसके लिए ही सन्यसी आद माथा कूटते हैं। तुमपुरुषार्थ करते हो सुखधाम के लिए। यह है प्रवृति [illegible]र्ग वालों के लिए। निवृति मार्ग वाले जा न सके। तुम जानते हो हम प्रवृति मार्ग वाले थे। अभी फिर अपवित्र [illegible]। प्रवृति मार्ग वालों का प्र काम निवृति मार्ग वाले कर न सके। यज्ञ तप दान आद सभीप्रवृति मार्ग वाले

करते थे। वह लोग घर-बार छोड़ कर जंगल में जाते थे। उनकोतो तीर्थ आदकरने का नहीं है। वह जानते ही हैं ब्रहम ईश्वर है। ब्रहम महात्मत्व को याद करते हैं। उनको ब्रहम-ज्ञानी तत्वज्ञानी कहा जाता है। ज्ञान भी देंगे ब्रहम में लीन होने का। यादभी ब्रहम को करेंगे। जब सतोप्रधान थे तो उन में ताकत थी। पीछे गिरते आये हैं। अभी तो यहां आकर गुरु बन कर बैठे हैं। तुम्हारी कितनी इनसल्ट की है। स्त्री को जीते जी बिधवाबना देते। बच्चों कोअरफन बना देते हैं। यह भी जानते हो रावण सारी दुनिया को निधणका बना दिया है। क्यों बापधणी को भूल गये हैं। तुम अभी फील करते हो। अभी हम सभी को जानते हैं। शिव बाबा हमको घर बैठ पढ़ा रहे हैं। कद का बाप सुख देने वाला है बेहद का। उन से तुम बहुत समय बाद मिलते हो तोप्रेम के आंसू आते हैं। बाबा कहने से ही रोमांच खड़ी हो जाती है। ओ हो बाबाआया है हम बच्चों की सर्विस में। बाबा हमको इस पढ़ाईसे गुल2 बनाते हैं। इस गन्दी छी छी दुनिया से हमको ले जावेंगे अपने साथ। भक्ति-मार्ग में तुम्हारी आत्मा कहती थी बाबा आप आवेंगे तो हम वारी जावेंगे आप का ही बनेंगे। दूसरा कोई नहीं। नम्बरवार तो है ही। सभी का अपना2 पार्ट है। कोई तो बाप को बहुत प्यार करते हैं। आज भी बच्ची ने देखा बाबा चला जाता है तो रोने लग पड़ी। आगे विदाई देनेलिएयहां हाल में आते थे। एक दो को देख सभी को रोना आ जाता था वह भी रसम निकाल दी। अभी तो कहते हैं फील इन लाईन। मिलिट्री के माफिक। सतयुग में रोने करने का नाम ही नहीं होता। यहांतुम कितनारोते हो। जब स्वर्ग में गया तो रोना क्यों चाहिए। और ही बाजा बजाना चाहिए। वहां तो बाजे बजते हैं। तमोप्रधान शरीर खुशी से छोड़ देते हैं। यहरसम भी शुरु यहां से होती है। यहांतुम कहेंगे हमको अपने घर जाना है। वहां तो समझते हैं पुनर्जन्म लेना है। तो बाप सभी बातें समझा देते हैं। भ्रमरी का मिशाल भी तुम्हारा है। तुम ब्राहमणियां हो। विष्टा के कीड़ों को याद भूं2 करते हो। वह सन्यासी आद क्या जाने इन बातों को। वह तो जो सुनाते हैं [illegible] नहीं। बाप कहते हैं यदा यदा हि... इनका भी अर्थ नहींसमझते हैं। इसलिए बापकहते हैं मैं आया हूं। मनुष्यों को ज्ञान तो है नहीं। उनको तो जो सुनाओ सत्य2 करते रहेंगे। ऐसी2 बातें शास्त्रों सुन2 कर मनुष्य कितना खुश होते हैं। तुमको बाप कहते हैं यह तो सुनना न है। यह है भक्ति का भूसा। यह छोड़ देना है। इस शरीर को भी छोड़ देना है। जीते जी मरना है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। अभी हमको वापस जाना है। अपन को आत्मा समझ बापको यादकरो। देह को भूल जाओ। बापतो बहुत ही मीठा है। कहते हैं मैं तो तुम बच्चों को विश्व कामालिक बनाने आया हूं। अभी सुखाधाम और शान्तिधाम को याद करो। अल्फ और बे। यह है सुखधाम। शान्तिधाम हम आत्माओं का घर है। हम ने पार्ट बजाया अभी घर जाना है। वहां यह छी छी नहीं ले जावेंगे। अभी तो यह बिल्कुल ही जड़-जड़ीभूत शरीर हो गया है। अभी हमको बाप सम्मुख सिखलाते हैं ईशारे में। मैं भी आत्मा हूं। तुम भी आत्माहो। मैं इस शरीर से अलग होकर तुमको भी वह सिखलाता हूं। तुम भी अपन को इस शरीर से अलग समझो। अभी घर जाना है। यहां तो रहने का नहीं। यह भी जानते हो विनाशहोना है। भारत में खून की नदियांबहेंगी। यहां ही सभी धर्म वाले इकट्ठे हैं। सभी आपस में लड़ मरेंगे। यह पिछाड़ी का मौत है। पाकिस्तान में क्या2 होता था। हम उनको खून करने लगे वह उनको करने लगे। बड़ी कड़ी सीन थी। कोई देखे तो बेहोश हो जाये। अभी बाबा हमकोमजबूत बनाते हैं। शरीर का भान ही निकाल देते हैं। बाबाने देखा बच्चे याद में नहीं रहते हैं। बहुत कमजोर हैं। इसलिएसर्विस भी नहीं बढ़ती है। पढ़ी2 लिखते हैं बाबा भूल जाते हैं। बुद्धि लगती नहीं। बाबा कहते लोग अक्षर छोड़ दो। विश्व को बादशाही देने वाले बाप को भूल जाते हो। थप्पर मारो अपन को। आगे भक्ति में बुद्धि और तरफ चली जातीथी तो अपन को चुनरी पहनते थे। ऐसे भी बहुत करते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे तुम आत्माअविनाशीहो। सिर्फ पावन और पतित बनते हो। बाकीआत्मा कोई छोटी बड़ी नहीं होती। परम आत्माबाप को कहा जाता है। सन्यासियों को तुम पवित्र समझते थे तब तो माथा टकते हो। बाप समझाते हैं

तुम जो भी गुरु करते हो वास्तव में किसको भी करना नहीं चाहिए। यह तो तुमको विधवा बना देते हैं। अभी बाप आकर तुमको इनकी जंजीरों से छुड़ाते हैं। तुम्हारे हमजिन्स को आरफन बना देते हैं। घर, बार छोड़ चले जाते हैं। बाप गया तो घर निधणका हुआ। कोई सम्भालने वाला नहीं। कहते हैं ना तुम लड़ते क्या हो। कोई धणी-धोणी नहीं है अभी सारी दुनिया में लड़ाई झगड़े हैं। निधणके बन पड़े हैं। बाप आकर धणी का बनाते हैं। सारी राजाई तुमको मिल जाती है। सच्ची कमाई होती है फिर झूठी कमाई को क्या करेंगे। इसलिए उसको एक्सचेंज करना बहादुरी है। कर के दिखाना है। बाप कहते हैं हम ने कर के दिखाया ना। बस हम यह सौदा करते हैं। बच्चों को निमित्त बनाकर सभीकुछ दे दिया। यहभी तुम सम्भालो। पालना करो। जिनकी भठी बनी उनके हवाले कर दिया। शास्त्रों में तो झूठी बातें डाल दिया है। कृष्णको इतना प्यार भी करते, बैकुण्ठ का प्रिन्स वहां फिर कंस जरासंधी कहां से आवेंगे। मनुष्य कितने बेसमझ बन गये हैं। यह तो बड़ा बाबा है। बच्चों को बैठ कर समझाते हैं कल क्या थे आज क्या बन गये हो। बच्चों को लज्जा आती है बाबा तो सच्च कहते हैं। अभी बाप आया है उनको याद करना है। देवी गुण धारण करनी है। प्रजा भी बनानी है। इसलिए बाप पूछते रहते हैं जो मास, दो तीन सर्विस करने लिए तैयार हैं वह नाम देवे। बच्चों की जरूरत है बच्चों की। वह जिसमानी सोसल वर्कर तो बहुत हैं। अभी तो रूहानी सेवा करनी है। जो सर्विस लिए तैयार हो वह बाबाको लिखे तो बड़े सेन्टर खोल देंगे। जितना2 आप समान बनावेंगे तुम्हारी प्रजा बनती जावेगी। कोई तो प्रतिज्ञा भी करते हैं बाबा हम आप से पूरा वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। वल्ड से लिख कर देते हैं। बाप कहते हैं यह युध का मैदान है। तुम याद करेंगे मायाबुधि योग अपने तरफ लगा देंगी। बाप तो कहते हैं शरीर निर्वाह लिए धंधा आद भी भल करो काम काज करते धंधा आद करते बुधि का योग वहां लगाओ। (आशुक माशूक मिशाल) एकदो को देख खुश होते रहेंगे। तुम तो आशुक हो बहुत पुराने। भक्ति मार्ग में मीपूजा करते याद करते [illegible] तो कहते हैं मैं सम्मुख आया हूं। ड्रामा के प्लेन अनुसार कल्प पहले मिशल तुम बच्चों पास आया हूं साधारण तन में। इसलिए गोरा और सांवरा कहते हैं। अभी भी निशानियां हैं ना। राम को भी काला क्यों बनाते हैं। ना0 को भी कहां गोरा कहां काला दिखाते हैं। उनका अर्थ भी बाप ने समझादिया है। और किसकी बुधि में नहीं आवेगा। काम चिक्षा पर बैठ काले हो गये हैं। जगतनाथ के मंदिर में बहुत अच्छी समझानी है। ऊपर में दिखाया है देवतारं वाममार्ग में गये। तो चित्र भी काले बनाये हैं। तुम इन बातों को अभी समझ गये हो। वह तो समझते हैं कृष्ण सदैव है ही। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण। अभी तुमको सारी दुनिया भूल अपना घर और राजधानी याद पड़ती है। अल्फ और बे बादशाही। यह चक्र कैसे फिरता है कल्प की आयु कितनी है तुम जानते हो। देवी देवतारं भी नहीं जानते। मनुष्य तो लाखों वर्ष कह देते हैं। झाड़ की इतनी बड़ी आयु थोड़े ही होती है। बड़ के झाड़ की सब से बड़ी आयु होती है। बच्चों को तो खुशी होनी चाहिए बेहद का बाबा हमको पढ़ाते हैं। धोबी को बुलाया है हमारी आत्मा को शुध करो। जिससे फिर शरीर भी शुध मिलेगा। सारे विश्व को कितना शुध बना देते हैं। अहरूहानी धोबी भी है। बैरिस्टर भी है। सोनार भी है। सभी है। गायन है तुम मात पिताबन्धु आद हो।2। जन्म लिए कितना सुख देते हैं। बाकी तो सभी दुःख ही देते हैं। नम्बरवन है काम कटारी। पैसे आद लूट कर मार देते हैं। पैसे के लिए तो कितनी मारा मारी होती है। बाप तो तुमको 2। जन्मों लिए झोली भर देते हैं। वहां मारामारी नहीं। जो तुम से कोई छीन न सके। बुधि में आता है ना। इतनी खुशी भी होनी चाहिए। हम श्रीमत पर स्वर्ग क राजधानी स्थापन कर रहे हैं। अपने से पूछते रहो हम क्या बनेंगे। अपनी अवस्था से अपना पद समझ सकते हो। फिर समझ कर पुरुषार्थ करना है। बच्चों को समझाते तो बहुत अच्छी तरह से हैं। अच्छा बच्चों को गड़मार्निंग और नमस्ते।

डायरेक्शन:-

******* मधुबन में जब कोई भी पार्टी आवे तो आते ही स्टेशन पर, जाने की रिजर्वेशन करा लेवें। नहीं तो भीड़ के कारण बहुत तकलीफ होती है।